7.2

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन-
माश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति
श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्।।२९।।

आश्चर्यवत्=आश्चर्य की भाँति; **पश्यति**=देखता है; **कश्चित्**=कोई; **एनम्**=इस आत्मा को; **आश्चर्यवत्**=आश्चर्य की भाँति; **वदति**=कहता है; **तथा**=वैसे; **एव**=ही; **च**=तथा; **अन्यः**=दूसरा; **आश्चर्यवत्**=आश्चर्य की भाँति; **च**=तथा; **एनम्**=इस आत्मा को; **अन्यः**=दूसरा; **शृणोति**=श्रवण करता है; **श्रुत्वा**=सुनकर; **अपि**=भी; **एनम्**=इसे; **वेद न**=नहीं जानता; **च**=तथा; **एव**=ही; **कश्चित्**=कोई-कोई।

अनुवाद

कोई महापुरुष ही इस आत्मा को आश्चर्य की भाँति देखता है; वैसे ही दूसरा कोई इसके तत्त्व का आश्चर्य की भाँति वर्णन करता है; कोई-कोई इसका आश्चर्य की भाँति श्रवण करता है और कोई-कोई तो श्रवण करने पर भी इसे नहीं जानता।।२९।।

तात्पर्य

'गीतोपनिषद्' मुख्य रूप से उपनिषदों के सिद्धान्तों पर आधारित है। इसलिए कठोपनिषद् (१.२.७) में इसके समान श्लोक का होना आश्चर्यदायक नहीं है।

श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः शृण्वतोऽपि बहवो यं न विद्युः।
आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्ध्वाऽऽश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः।।

भीमकाय पशु, बृहद् वटवृक्ष तथा परम सूक्ष्म जीवाणुओं में भी अणु-आत्मा स्थित है—यह तथ्य निस्सन्देह अति विस्मयकारी है। विशेष रूप से, अल्पज्ञ और उच्छृंखल मनुष्य तो आदिजीव ब्रह्मा के शिक्षक, ज्ञान के परम स्रोत श्रीभगवान् के उपदेश को सुनकर भी चैतन्य स्फुलिंग अणु-आत्मा की महिमा को समझ नहीं पाते। विषय-परायण होने से इस युग के अधिकांश लोग यह कल्पना तक नहीं कर सकते कि यह सूक्ष्म-आत्म-कण इतना अणु-तुल्य होने के साथ ही इतना महान् कैसे हो सकता है। इसी से कहा है कि आत्मा के स्वरूप-वर्णन को वे आश्चर्य के समान देखते हैं। लोग मायावश इन्द्रियतृप्ति के कार्य में इतने अधिक व्यस्त हो रहे हैं कि आत्मज्ञान के लिए उनके पास समय ही नहीं है, यद्यपि यह सत्य है कि इस आत्मज्ञान के बिना सब प्रकार की क्रिया करने पर भी जीवन-संघर्ष में अन्ततः पराभव ही होता है। यह विचार कोई नहीं करता कि आत्मजिज्ञासा करके सांसारिक दुःखों से मुक्त हो जाना चाहिए।

जो आत्मतत्त्व के जिज्ञासु हैं, वे सत्संग में उसका श्रवण करते हैं। परन्तु कभी-कभी अज्ञानवश परमात्मा तथा अणु-आत्मा में विस्तार भेद किये बिना वे दोनों को सब प्रकार से एक समझ बैठते हैं और सत्पथ से भ्रष्ट हो जाते हैं। विभु-आत्मा तथा अणु-आत्मा के यथार्थ स्वरूप, कार्य, परस्पर सम्बन्ध और अन्य प्रमुख-गौण